

## खण्ड – 3 : प्रमुख विचारक – 2

### इकाई – 3 : टी. एस. एलियट

#### इकाई की रूपरेखा

- 3.3.0. उद्देश्य कथन
- 3.3.1. प्रस्तावना
- 3.3.2. टी. एस. एलियट : व्यक्ति परिचय
  - 3.3.2.1. व्यक्तित्व
  - 3.3.2.2. कृतियाँ
- 3.3.3. टी. एस. एलियट की अवधारणा
  - 3.3.3.1. परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा
  - 3.3.3.2. निर्वैयक्तिकता
  - 3.3.3.3. मूर्त विधान
- 3.3.4. टी. एस. एलियट का काव्य चिन्तन : समीक्षा
  - 3.3.4.1. आलोचना का मूल प्रतिपाद्य
  - 3.3.4.2. प्रभाववादी समीक्षा का विरोध
  - 3.3.4.3. आलोचना का आधार
- 3.3.4. टी. एस. एलियट के काव्य चिन्तन के महत्त्वपूर्ण आयाम
  - 3.3.4.1. संश्लिष्ट संवेदनशीलता
  - 3.3.4.2. काव्य भाषा
  - 3.3.4.3. काव्य की स्वायत्तता और साहित्यिक प्रतिमान
- 3.3.5. सारांश
- 3.3.6. शब्दावली
- 3.3.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची
- 3.3.8. सम्बन्धित प्रश्न

#### 3.3.0. उद्देश्य कथन

प्रस्तुत इकाई 'प्रमुख विचारक-2' खण्ड की तीसरी इकाई है जो बीसवीं सदी के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आलोचक टी. एस. एलियट से सम्बन्धित है। साहित्य चिन्तन और आलोचना के क्षेत्र में एलियट पाश्चात्य साहित्य जगत् में अभूतपूर्व व्यक्तित्व के रूप में उल्लेखनीय हैं। बीसवीं सदी के दो विश्वयुद्धों की विकट मानवीय त्रासदी के बीच एलियट का काव्य चिन्तन वस्तुतः परम्परा और आधुनिकता के अर्थ व सम्बन्ध को नया सन्दर्भ प्रदान करता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- 3.3.0.1. टी. एस. एलियट की परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता व मूर्त विधान सम्बन्धी अवधारणा को समझ सकेंगे।
- 3.3.0.2. उनके समीक्षा सिद्धान्त की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- 3.3.0.3. टी. एस. एलियट के काव्य चिन्तन के विविध आयामों का विवेचन कर सकेंगे।

### 3.3.1. प्रस्तावना

पाश्चात्य काव्यशास्त्र की सुविकसित व सुदीर्घ परम्परा में टी. एस. एलियट ने काव्य सम्बन्धी बुनियादी सवालों पर यद्यपि परम्परागत पद्धति से भिन्न नए विचारों का प्रतिपादन किया है, किन्तु विचारों के नए नए के बावजूद काव्य सम्बन्धी उनके चिन्तन को ऐसे कुछ शीर्षकों के अन्तर्गत सुविधापूर्वक रखा जा सकता है जो कविता या साहित्य विवेचन के सिलसिले में परम्परा से उल्लेखनीय रहे हैं। सैद्धान्तिक तौर पर टी. एस. एलियट ने जहाँ एक ओर काव्य विषय के क्षेत्र को संकीर्ण बनाने का विरोध किया है, वहीं दूसरी ओर काव्य चिन्तन में उन्हीं विषयों को ग्रहण करने पर बल दिया है जिनके साथ रचनाकार का रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो सके। इसलिए कविता के विषय और काव्य वस्तु के सम्बन्ध में उनके विचार सार्थक हैं।

### 3.3.2. टी. एस. एलियट : व्यक्ति परिचय

रचनाकार और आलोचक के रूप में टी. एस. एलियट बीसवीं सदी के एक महान् हस्ताक्षर हैं। वस्तुतः उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में विलियम वर्ड्सवर्थ, सैम्युअल टेलर कॉलरिज, शेली आदि विचारकों ने जिस आलोचना का सूत्रपात किया था उसमें कवि व्यक्तित्व, भावना, कल्पना आदि की प्रमुखता रही। वैसे इसी सदी के उत्तरार्द्ध में कला का अतिवादी रूप हावी रहा। लेकिन बीसवीं शताब्दी की अंग्रेजी कविता की तरह अंग्रेजी आलोचना के क्षेत्र में टी. एस. एलियट का आगमन होता है। उन्होंने अपने युग की साहित्यिक अभिरुचि का न केवल संस्कार-परिष्कार किया, अपितु तत्कालीन दरबारी काव्य परम्परा के निकृष्ट रीतिवादी संस्कारों से काव्य को मुक्ति दिलाने की सार्थक पहल भी की।

#### 3.3.2.1. व्यक्तित्व

पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय परम्परा में समीक्षा को प्रभावित करने वाले विचारकों में टी. एस. एलियट की भूमिका अत्यन्त उल्लेखनीय है। उनका जन्म 26 सितंबर 1888 को सेंटलुई (अमेरिका) में हुआ। हार्वर्ड विश्वविद्यालय से उन्होंने 1910 ई. में एम.ए. किया तथा वहीं के साहित्यिक वातावरण में उन्होंने काव्य सृजन आरम्भ किया। आगे पेरिस और लंदन जाकर भी उन्होंने अपनी अकादमिक शिक्षा पूरी की। वर्ष 1948 ई. में इन्हें प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 04 जनवरी, 1965 ई. को उनका निधन हो गया।

### 3.3.2.2. कृतियाँ

टी. एस. एलियट को विवादास्पद पाश्चात्य समीक्षक माना जाता है। इनके कवि, कविता, दर्शन, साहित्य समीक्षा आदि से सम्बन्धित मत महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ विवादास्पद भी हैं। उल्लेखनीय है कि हिन्दी साहित्य जगत् के प्रयोगवादियों पर इनका अत्यधिक प्रभाव परिलक्षित होता है। टी. एस. एलियट की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना “Tradition and Individual Talent” है जिसमें उन्होंने साहित्य की आधारभूत एवं मौलिक समस्याओं को आधारभूत ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनकी काव्य कृतियों में ‘दि लव सांग ऑफ एल्फर्ड प्रूफ्रांक’ (1915), ‘दि वेस्टलैंड’ (1922), ‘फॉर क्वार्टर्स’ (1943); नाट्य कृतियों में ‘मर्डर इन द कैथिड्रल’ (1935), ‘दि फैमली रियूनियन’ (1939) तथा ‘दि कॉकटेल पार्टी’ (1950); आलोचनात्मक रचनाओं में ‘दि सेक्रेड वुड’ (1920), ‘होमेज टु जॉन ड्राइडन’ (1924), ‘एलिजबेथेन एसेज़’ (1932), ‘दि यूज ऑफ पोएट्री एंड दि यूज ऑफ क्रिटिसिज्म’ (1933), ‘सेलेक्टेड एसेज़’ (1934), और ‘एसेज़ एन्शेंट एण्ड मॉडर्न’ (1936) बहुत चर्चित हैं। इतना ही नहीं, वर्ष 1922 ई. में उन्होंने त्रैमासिक पत्रिका ‘क्राइटेरियन’ की स्थापना की तथा उसका सम्पादन दायित्व भी सम्भाला। एलियट के साहित्यिक व्यक्तित्व के विस्तार इस पत्रिका की भूमिका अत्यन्त उल्लेखनीय है।

### 3.3.3. टी. एस. एलियट की अवधारणा

दो विश्व युद्धों के बीच रचना कर्म में सक्रिय टी. एस. एलियट के चिन्तन में परम्परा और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उनके काव्यशास्त्रीय चिन्तन पर एक ओर जहाँ दांते, एलिजाबेथेन तथा जैकोबियन नाटक का प्रभाव है, वहीं दूसरी ओर उन्नीसवीं सदी के प्रतीकवादियों से उनकी शैली प्रभावित हुई। कहना सही होगा कि आलोचक के रूप में एलियट ऐसे चिन्तक हैं जिन्होंने अपनी पीढ़ी की अभिरुचि और विस्तार चेतना को बहुत दूर तक अभिप्रेरित किया है। साथ-ही-साथ सर्जक की दृष्टि से उन्हें जो काव्य चिन्तन ग्रहण करने योग्य प्रतीत हुआ है, केवल उसी को ग्रहण करते हैं। यही कारण है कि पूर्ववर्ती विचारों से प्रभावित होने के बावजूद भी टी. एस. एलियट की अवधारणा किसी का अनुगमन नहीं करती है।

#### 3.3.3.1. परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा

स्वच्छंदतावादी परम्परा में कवि की प्रतिभा और अन्तःप्रेरणा को ही कला सृजन का मूल आधार माना गया है। टी. एस. एलियट इस मत का विरोध करते हैं। वस्तुतः आधुनिक आलोचना के क्षेत्र में परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा के रचनात्मक सम्बन्ध का प्रभावशाली चिन्तन वस्तुतः तत्सम युगीन यूरोप के बौद्धिक परिवेश की उपज है। पूर्ववर्ती काव्य चिन्तन के आलोक में ‘परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा’ टी. एस. एलियट का एक बहुचर्चित निबन्ध है जिसमें उन्होंने सभ्यता के संकट को उसके मूलभूत दायरे में समझकर व्याख्यायित किया तथा परम्पराओं में रूढ़ि तथा मौलिकता के बीच स्पष्ट भेद को अपने चिन्तन के केन्द्र में रखा। उनके अनुसार परम्परा के अभाव में कवि छाया मात्र है और उसका कोई अस्तित्व नहीं होता है। इसलिए परम्परा अत्यन्त महत्वपूर्ण वस्तु है जिसके

बिना हम वर्तमान को नहीं समझ सकते हैं। विवेचनार्थ, उनकी 'परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा' सम्बन्धी स्थापनाओं के आलोक में कतिपय महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख किया जा सकता है; यथा –

- 1) टी. एस. एलियट के अनुसार परम्परा का विस्तार देश और काल दोनों में होता है। यह कोई मृत वस्तु नहीं है, अपितु एक प्रकार की निरन्तरता है जो अतीत के साहित्यिक सांस्कृतिक धरोहर के महत्त्वपूर्णश से वर्तमान को सम्पन्न और सार्थक बनाती है। साथ-ही-साथ भविष्य हेतु मार्ग प्रशस्त करने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी करती है।
- 2) परम्परा पर चिन्तन करते हुए एलियट ने यह विचार प्रकट किया है कि प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक प्रजाति की अपनी रचनात्मक ही नहीं, आलोचनात्मक मानसिकता भी हुआ करती है।
- 3) उन्होंने जोर देकर कहा है कि अतीत को वर्तमान से उसी तरह परिवर्तित होना चाहिए जिस तरह वर्तमान अतीत से नियंत्रित और निर्देशित होता है।
- 4) किसी कवि की कृति के श्रेष्ठ ही नहीं, बल्कि सर्वथा वैयक्तिक पक्ष भी वही होते हैं जिनमें उसके पहले के रचनाकारों का प्रभाव प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुआ होता है। यही कारण है कि व्यक्तिगत प्रज्ञा परम्परा से असम्बद्ध विषय नहीं है। वस्तुतः परम्परा से गहरे अर्थों में जुड़कर ही एक रचनाकार अपनी वैयक्तिक सामर्थ्य को प्रभावशाली तरीके से अभिव्यक्त कर सकता है।
- 5) चूँकि, परम्परा का रचनाकार के साथ एक संघर्ष-संवाद निरन्तर चलता रहता है, इसलिए कवि के लिए परम्परा साँस की तरह सहज, स्वाभाविक, अनिवार्य और नैसर्गिक क्रिया है।
- 6) परम्परा के प्रति लगाव 'अन्धानुकरण' का पर्याय नहीं है, क्योंकि अन्धानुकरण में मौलिकता नष्ट हो जाती है। उनके अनुसार परम्परा को केवल विरासत के रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता, उसकी प्राप्ति के लिए कठोर साधना अनिवार्य है।
- 7) चूँकि, परम्परा बोध का अभिप्राय 'इतिहास बोध' है, इसलिए रचनाकार को इतिहास बोध आवश्यक है। इस सन्दर्भ में एलियट की स्पष्ट धारणा है कि इतिहास बोध का तात्पर्य अतीत के अतीत्व का ही नहीं है, अपितु उसकी वर्तमानता का अनुभव भी है। इतना ही नहीं, इतिहास बोध अपनी पीढ़ी के रचना कर्म को ध्यान में रखकर लिखना नहीं है, अपितु उसमें होमर से लेकर पूरे यूरोप के साहित्य, साथ ही अपने देश के समग्र साहित्य, दोनों का अस्तित्व हुआ करता है। वस्तुतः इतिहास बोध ही कवि को परम्परा सम्मत बनाता है।
- 8) रचनाकार के लिए अतीत की चेतना को विकसित किया जाना अपेक्षित है। और, उसकी प्रगति निरन्तर आत्म बलिदान में है। क्योंकि, व्यक्तित्व के इस निर्वैयक्तिकरण से ही कला विज्ञान की स्थिति को प्राप्त कर सकती है।

### 3.3.3.2. निर्वैयक्तिकता

टी. एस. एलियट की स्थापना के अनुसार कविगत भाव और काव्यगत भाव की प्रकृति में आधारभूत अन्तर होता है। आलोच्य परिप्रेक्ष्य में एजरा पाउंड के विचारों का उन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है जहाँ यह स्वीकार

किया गया है कि कवि वैज्ञानिक के समान ही निर्वैयक्तिक और वस्तुनिष्ठ होता है। वे 'निर्वैयक्तिकता' की सैद्धान्तिक व्याख्या इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने इसका अर्थ कवि के व्यक्तिगत भावों की विशिष्टता का 'सामान्यीकरण' बताया है। तदनुसार कवि अपनी तीव्र संवेदना और ग्रहण क्षमता से अन्य लोगों की अनुभूतियों को एक प्रकार से आयत्त कर लेता है जो उसकी निजी अनुभूतियाँ हो जाती हैं। उसके बाद जब वह अपने स्वचिन्तन द्वारा आयत्त अनुभवों को काव्य में व्यक्त करता है तो वे उसके निजी अनुभव होते हुए भी सबके अनुभव बन जाते हैं।

वैसे टी. एस. एलियट के 'निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त' की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि कविता कवि व्यक्तित्व के निरपेक्ष नहीं हो सकती है। और, कवि के अनुभव कविता में अभिव्यक्त होकर 'सामान्यीकृत' बन जाते हैं। लेकिन एलियट कवि और कलाकृति दोनों को परस्पर प्रभावित होना स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि में कवि अपने पात्रों को अपना कुछ अंश जरूर प्रदान करता है, लेकिन वह अपने द्वारा निर्मित पात्रों से वह स्वयं भी प्रभावित होता है। उल्लेखनीय है कि इस समग्र प्रक्रिया में पूरी रचना कवि के व्यक्तित्व से निर्मित हो उठती है। कवि भी अपने काव्य जगत् में व्याप्त हो जाता है। अस्तु, कहना सही होगा कि एक अर्थ में टी. एस. एलियट भी कविता में कवि के व्यक्तित्व को मान्यता प्रदान करते हैं। उनकी 'मूर्त विधान' अवधारणा की व्याख्या में भी वैयक्तिक भावों के निर्वैयक्तिक में रूपान्तरित होने की प्रक्रिया निहित है।

### 3.3.3.3. मूर्त विधान

टी. एस. एलियट के 'निर्वैयक्तिकता' की मूल अवधारणा को समझने के लिए 'मूर्त विधान' सम्बन्धी व्याख्या का अध्ययन एवं विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। 'मूर्त विधान' का सर्वप्रथम उल्लेख हमें अरस्तू के चिन्तन में मिलता है। कालान्तर में फ्रांस के प्रतीकवादियों ने भी अपने काव्यशास्त्रीय विवेचन में इसका उपयोग किया है। विवेचनार्थ, टी. एस. एलियट अपने बहुचर्चित निबन्ध 'हेमलेट और उसकी समस्याएँ' में 'मूर्त विधान' की स्थापना करते हैं। उल्लेखनीय है कि उनके इस सिद्धान्त को भारतीय काव्यशास्त्र में 'विभावन व्यापार' से सम्बन्धित अवधारणा के अत्यन्त निकट स्वीकार किया जाता है। एक कवि के रूप में एलियट का मानना है कि अमूर्त का संचार चुनौतीपूर्ण कार्य होता है और इसका निदान यह है कि रचनाकार किसी मूर्त वस्तु का सहारा लेकर अमूर्त को सम्प्रेषित करने का प्रयास करे। सारतः उनकी 'मूर्त विधान' सम्बन्धी व्याख्या के आलोक में कतिपय महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख किया जा सकता है; यथा –

- (i) भाव अथवा विचार मूलतः अमूर्त होते हैं, इसलिए उसकी अभिव्यक्ति किसी मूर्त वस्तु या स्थिति की सहायता से ही सम्भव है।
- (ii) एलियट वस्तु की व्यञ्जकता से अधिक भाव के साथ उसके सटीक सम्बन्ध को अहमियत प्रदान करते हैं।
- (iii) भाव के प्रकृत रूप से सम्बद्ध कोई वस्तु, कोई समुदाय, कोई परिस्थिति या कोई घटना शृंखला हो सकती है जिससे उस अमूर्त भाव को मूर्त रूप में अभिव्यक्त और सम्प्रेषित किया जा सके।

- (iv) बाह्य वस्तुओं के आधार पर ही कवि और पाठक एक भावभूमि पर मिलते हैं। क्योंकि, एक बार भाव के उद्बुद्ध होते ही उससे सम्बद्ध वस्तु व्यापार की ऐन्द्रीय अनुभूति समाप्त हो जाती है।
- (v) भावाभिव्यक्ति में जो मूर्त विधान अपेक्षित है, उसकी कमी रचना को कमजोर बना देती है।

### 3.3.4. टी. एस. एलियट का काव्य चिन्तन : समीक्षा

टी. एस. एलियट के काव्यशास्त्रीय चिन्तन में समीक्षा के अन्तर्गत साहित्य की मूलभूत आकृति को नए सिरे से समझने का प्रयास सहज ही परिलक्षित होता है। विज्ञान के आधुनिक युग में किसी बात को सर्वांशतः स्वीकार कर लेना वैसी भी सहज और सरल नहीं है। शंकाएं न केवल आज उठी हैं, अपितु परम्परा से उठती रहती हैं। निःसंदेह शंकाओं से जूझने और निपटने के प्रयास में ही विचार की परम्परा आगे बढ़ती रही है तथा समीक्षा के नए आयाम उभरते रहे हैं, किसी एक काव्य सिद्धान्त को काटकर, वह कितना ही स्वीकृत क्यों न हो, किसी दूसरे सिद्धान्त का सामने आना, पाश्चात्य चिन्तन परम्परा में भी हेय नहीं माना गया है। एलियट के काव्य चिन्तन में भी 'समीक्षा' का सन्दर्भ व मूल्यांकन इसका अपवाद नहीं है।

#### 3.3.4.1. आलोचना का मूल प्रतिपाद्य

टी. एस. एलियट रुचि-परिष्कार को आलोचना का मूल प्रतिपाद्य स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार यथार्थबोध ही आलोचक का सबसे बड़ा गुण होना चाहिए। उनकी प्रबल धारणा है कि सृजन प्रक्रिया में यथार्थबोध धीरे-धीरे विकसित होता है और उसका विकास सभ्यता के चरमोत्कर्ष का ही बोधक होता है। कलाकृति की समझ, आस्वाद और परिशंसन के लिए भूमि तैयार करना आलोचना का प्रमुख लक्ष्य है। यही कारण है कि उन्होंने यह मत प्रकट किया कि सच्ची आलोचना का लक्ष्य कवि नहीं, अपितु काव्य है। इस तरह वे व्यक्तिवादी आलोचना पद्धति को चुनौती प्रदान करते हैं। वस्तुतः उनका विरोध आलोचक के व्यक्तित्व से नहीं, बल्कि 'व्यक्ति-तत्त्व' की अनियंत्रित अभिव्यक्ति से है।

#### 3.3.4.2. प्रभाववादी समीक्षा का विरोध

टी. एस. एलियट के अनुसार आलोचना का अभिप्राय लिखित शब्दों के माध्यम से कलाकृतियों का भाष्य और निरूपण, कलाकृतियों का स्पष्टीकरण और अभिरुचि का परिष्कार है। यही कारण है कि उनके काव्य चिन्तन में 'प्रभाववादी समीक्षा' पद्धति के प्रति घोर विरोध सहज ही परिलक्षित होता है। उनके अनुसार इस पर ज्यादा विचार नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह उन मानसों को प्रभावित करती है जो इतने दुर्बल और आलसी हैं कि मूल कलाकृति का सामना करने से कतराते हैं। प्रभाववादी समीक्षा का विरोध करते हुए वे बारम्बार इस बात पर जोर देते हैं कि आलोचकों को अपने आलोचना कर्म में व्यक्तिगत-अभिरुचि संस्कार को हावी नहीं होने देना चाहिए। अपनी बहुचर्चित किताब 'दि सेक्रेड वुड' में उन्होंने यह मत प्रकट किया है कि आलोचक को व्यक्तिगत भावों से मुक्त होकर मूल रचना या कलाकृति पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। और, साथ-ही-साथ काव्य

अथवा साहित्य की समझ तथा आस्वाद चेतना में अभिवृद्धि करना ही आलोचना का परम दायित्व माना जाना चाहिए।

### 3.3.4.3. आलोचना का आधार

टी. एस. एलियट अपने आरम्भिक काव्य चिन्तन में आलोचना कर्म में साहित्येतर प्रतिमानों का पूरी तरह निषेध करते हैं। लेकिन बाद में वे धार्मिक और नैतिक आग्रहों के पक्षपाती प्रतीत होते हैं। उदाहरण के तौर पर 'आलोचना के सीमान्त' नामक निबन्ध में उन्होंने यह स्पष्ट लिखा है कि हर युग में हर कलाकार के लिए एक प्रकार के सम्मिश्रण की आवश्यकता पड़ती है ताकि वह अपनी धातु को कला में प्रयुक्त होने लायक बना सकें। यही कारण है कि प्रत्येक युग में कला की उपयोगिता का स्वरूप भी बदल जाता है तथा प्रत्येक युग कलात्मक चिन्तन में मूल्यांकन हेतु विशिष्ट मानदण्डों को स्थान देता है। फिर भी, यह निर्विवाद है कि टी. एस. एलियट ने आलोचना को रचनाकार से रचना की ओर उन्मुख कर पाश्चात्य आलोचना की दशा और दिशा ही बदल दी है।

### 3.3.4. टी. एस. एलियट के काव्य चिन्तन के महत्त्वपूर्ण आयाम

कला और साहित्य में वस्तु व शिल्प के सवाल को लेकर बहुत समय से विवाद चलता आया है। सवाल यह है कि काव्य या साहित्य में वस्तु तत्त्व प्रमुख होता है अथवा शिल्प तत्त्व, यह विवाद इस सीमा तक खींच गया है कि वस्तु और शिल्प को प्रमुखता देते हुए समीक्षा की भिन्न धारणाएँ ही बन गई हैं। टी. एस. एलियट जैसे पाश्चात्य विचारक इस परम्परा का निषेध करते हैं क्योंकि यह स्थिति कविता या कला के सही मूल्यांकन के लिए बाधक ही सिद्ध हुई हैं। उनके अनुसार कवि और समीक्षक दोनों में वास्तविक जीवन की संवेदन ज्ञानात्मक और ज्ञान संवेदनात्मक समीक्षा शक्ति विकसित होना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में वे काव्य के अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं जैसे, संश्लिष्ट संवेदनाशीलता, काव्य भाषा, काव्य की स्वायत्तता और साहित्यिक प्रतिमान पर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कृति को एक 'निवैयक्तिक' साधना के रूप में स्थापित करते हैं।

#### 3.3.4.1. संश्लिष्ट संवेदनशीलता

काव्य सृजन की प्रक्रिया में टी. एस. एलियट ने कल्पना की बजाय 'संश्लिष्ट संवेदनशीलता' पर बल दिया है। उनकी दृष्टि में महान् कवि और महान् काव्य में वैयक्तिकता और परम्परा, भावुकता और बौद्धिकता, भाव और विचार, समकालिकता और निरन्तरता, कथ्य और शिल्प का गहन सामंजस्य रहता है। इस आलोक में 'संवेदनशीलता का असाहचर्य' उनकी प्रख्यात अवधारणा है जिस पर फ्रांस के सुविख्यात कवि व आलोचक रेमी द गुर्मो का प्रभाव सहज ही परिलक्षित होता है। उनके अनुसार संवेदना न तो केवल भाव है और न ही मात्र विचार। वस्तुतः भाव और विचार के रासायनिक योग से ही संवेदना निर्मित होती है। कमजोर या दुर्बल काव्य में भाव और विचार की एकरूपता विघटित हो जाती है और अन्ततः काव्योत्कर्ष की हानि होती है। टी. एस. एलियट इसी को 'संवेदनशीलता' का असाहचर्य कहते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि 'संघटित संवेदनशीलता' के आधार पर ही एक कविता अपने चरमोत्कर्ष को धारण करती है।

### 3.3.4.2. काव्य भाषा

काव्य भाषा के सन्दर्भ में टी. एस. एलियट का मानना है कि प्रत्येक देश का अपना काव्य और काव्य चरित्र होना चाहिए जिसमें उस समाज की संवेदनशीलता के परिष्करण को, चेतना के विस्तार को सरलता से समझा जा सके। वस्तुतः (सभी) अन्य कलाओं से कविता इस अर्थ में अलग होता है कि जिस भाषा में उसकी रचना हो रही है, उस भाषा के लोगों के लिए जो उसका मूल्य है वह दूसरों के लिए नहीं हो सकता। गहन संश्लिष्ट भाव की अभिव्यंजना काव्य में ही सम्भव है, जबकि विचार की अभिव्यंजना गद्य में भी हो सकती है। उल्लेखनीय है कि गद्य की तुलना में काव्य अपने मूल चरित्र में अधिक स्थानीय होता है। यही कारण है कि सभी कलाओं में काव्य राष्ट्रीय अस्मिता का सर्वाधिक वहन करता है। अनुभूतियों और संवेदनों की सर्वाधिक समर्थ अभिव्यक्ति जनता की सामान्य व्यवहार की भाषा में होती है। वस्तुतः भाषा की संरचना, लय, मुहावरेदानी, ध्वनि आदि सभी उस भाषा में बोलने वालों के प्रजातिगत या वंशानुगत चरित्र को सामने लाते हैं।

एलियट यह जोर देकर कहते हैं कि एक कवि के रूप में कवि का पहला दायित्व अपनी प्रजाति की भाषा के प्रति है, उसके विस्तार-संस्कार-परिष्कार के प्रति है। अच्छा कवि भावी-संवेदनाओं का खोजी होता है और वह इस कार्य के द्वारा भाषा को विकसित और सम्पन्न बनाता है। उनकी स्थापना है कि यदि किसी भाषा में महान् कवियों के उत्पन्न होने की परम्परा में निरन्तरता नहीं है तो उस भाषा और संस्कृति का नाश हो जाता है।

चूँकि, काव्यगत संवेदनशीलता ही मानव जीवन के अनेक पक्षों की जटिलता को ठीक से व्यक्त कर पाती है, अतः काव्यभाषा ही किसी भाषा की व्यंजकता, प्रौढ़ता व सम्प्रेषण क्षमता का साक्ष्य हो सकती है। उल्लेखनीय है कि एलियट की भाषा सम्बन्धी मान्यताओं पर दांते और विलियम वर्ड्सवर्थ का प्रभाव सहज ही परिलक्षित होता है। वे शब्द के सार्थक प्रयोग, भाषा समृद्धि तथा भाषा की रक्षा पर विशेष बल देते हैं। विवेचनात्मक सन्दर्भ में, टी. एस. एलियट के भाषा सम्बन्धी विचारों को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है

- 1) चूँकि, काव्यभाषा बहुत हद तक सामान्य जन द्वारा प्रयुक्त भाषा पर निर्भर करती है, इसलिए काव्य का दायित्व है कि वह भाषा को इस स्तर तक विकसित करे कि वह जटिल से जटिल आधुनिक भावों को व्यक्त करने में सक्षम हो।
- 2) ग्रामीणों की साधारण, सार्थक, सटीक भाषा के शब्दों व लयों का नूतन प्रयोग प्रभावी संचार हेतु आवश्यक हैं।
- 3) आडम्बररहित और स्वच्छ शब्द सम्पदा का विकास काव्य अथवा साहित्य को ग्राह्य बनाता है।
- 4) शब्दों एवं भावों का पूर्ण सामंजस्य प्रभावी सम्प्रेषण के लिए आवश्यक है।
- 5) काव्यभाषा का संगीत से निकट का सम्बन्ध है तथा प्रकरण और अर्थ का प्रभाव काव्य संगीत पर भी पड़ता है।
- 6) शब्द माधुर्य ही काव्य का संगीत है। शब्दों के संगीत का निर्धारण उनके साहचर्य से होता है।



- 7) काव्यार्थ पूर्वनिर्धारित वस्तु नहीं है। विभिन्न पाठकों के लिए एक ही कविता के अर्थ भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। ये सभी अर्थ लेखकीय अर्थ से भी अलग हो सकते हैं। साधारण भाषा की अपेक्षा कविता में अर्थ का विशिष्ट सन्दर्भ निहित रहता है।
- 8) काव्य में सुन्दर शब्दों का रहना आवश्यक नहीं है। केवल ध्वनि ही शब्द की सुन्दरता का निर्धारण नहीं कर सकती।

### 3.3.4.3. काव्य की स्वायत्तता और साहित्यिक प्रतिमान

टी. एस. एलियट कविता को केवल कविता के रूप में देखने के पक्षपाती हैं। उनकी प्रबल धारणा है कि काव्य मनोरंजन का सबसे उत्कृष्ट रूप है। यह उत्तम छंदों में उत्तम शब्दों का उत्तम शब्द विन्यास है। इस सन्दर्भ में भाव सम्प्रेषण के लिए वे वस्तुनिष्ठ समीकरण को आवश्यक मानते हैं। काव्य या साहित्य में भाव प्रदर्शन का एक ही मार्ग है, और वह यह है कि उसके लिए वस्तुनिष्ठ समीकरण को प्रस्तुत किया जाए। वे एक ओर जहाँ काव्य का सम्बन्ध कुछ मायनों में नैतिकता, धर्म व राजनीति से जोड़ते हैं तो वहीं दूसरी ओर यह भी स्वीकारते हैं कि काव्य न तो राजनीति का निर्देश होता है और न ही नैतिकता का उपदेश। वैसे एलियट के बहुत से सैद्धान्तिक कथन ऐसे हैं जो अन्तर्विरोधों से भरे हैं। इतना ही नहीं, काव्य की स्वायत्तता के सम्बन्ध में एलियट के विचार अपने पूर्ववर्ती विचारकों, खासकर विलियम वर्ड्सवर्थ और आर्नल्ड के विचारों से बिल्कुल अलग है।

टी. एस. एलियट के अनुसार “काव्य की महत्ता केवल साहित्यिक प्रतिमान से ही निर्धारित नहीं हो सकती है, फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह कोई कृति साहित्य है अथवा नहीं, इसका निर्धारण भी केवल साहित्यिक प्रतिमानों से ही होता है”। काव्यगत नैतिकता के आलोक में उनका स्पष्ट विचार है कि “साहित्यिक कृतियों की नैतिकता का निर्णय प्रत्येक पीढ़ी की अपनी नैतिक संहिता से होता है”। कहना सही होगा कि नैतिकता के अर्थ में देश, काल व वातावरण के अनुसार बदलाव आता रहता है।

### 3.3.5. सारांश

चिन्तन और विचार के क्रम में जो अहेतुक और सतही है, समय के साथ-साथ वह आप ही पृष्ठभूमि में विलीन होता रहता है; किन्तु जो सार्थक और प्राणवान है, वह न केवल बच जाता है, अपितु आगे के चिन्तन के लिए नई जमीन भी बनाता है। इस दृष्टि से टी. एस. एलियट द्वारा प्रस्तुत ‘निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त’ तथा समीक्षा पद्धति निश्चय ही काव्य के मूल्यांकन के सम्बन्ध में न केवल चली आती हुई विचार परम्परा को आगे बढ़ाती है, अपितु हमें साहित्य की एक नई बुनियादी समझ भी देती है। इसलिए उनका काव्य चिन्तन कई मायनों में विवादास्पद होने के बावजूद भी विशिष्ट है।

### 3.3.6. शब्दावली

परिशंसन	:	आन्तरिक गुणों की प्रशंसा
बोध	:	ज्ञान
प्रकरण	:	सन्दर्भ
विन्यास	:	व्यवस्थापन
कालातीत	:	कालजयी

### 3.3.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची

1. सिन्हा, प्रो० सावित्री, पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.
2. जैन, निर्मला, काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. गुप्त, शान्ति स्वरूप, पाश्चात्य आलोचना के काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. शर्मा, डॉ० देवेन्द्रनाथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
5. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. श्रीवास्तव, अर्चना, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. सिंह, विजय बहादुर, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
8. भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.

### 3.3.8. सम्बन्धित प्रश्न

#### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. टी. एस. एलियट के 'निर्वैयक्तिकता' सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।
2. टी. एस. एलियट की मूर्त विधान सम्बन्धी अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
3. संश्लिष्टसंवेदनशीलता की अवधारणा को समझाइए।
4. एलियट के अनुसार आलोचना का मूल प्रयोजन क्या है ?
5. एलियट के परम्परा सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

#### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक प्रजाति की अपनी सर्जनात्मक ही नहीं, आलोचनात्मक मानसिकता भी हुआ करती है"। एलियट के इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
2. टी. एस. एलियट के काव्यशास्त्रीय चिन्तन के विभिन्न महत्वपूर्ण पक्षों का विवेचन कीजिए।

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

1. 'परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा' नामक निबन्ध के रचयिता हैं –
  - (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
  - (b) टी. एस. एलियट
  - (c) मैथ्यू आर्नल्ड
  - (d) विलियम वर्ड्सवर्थ
  
2. एलियट के अनुसार आलोचना का मूल प्रयोजन है –
  - (a) मनोरंजन
  - (b) व्यापार
  - (c) रुचि-परिष्कार
  - (d) उपर्युक्त सभी
  
3. सच्ची आलोचना का लक्ष्य कवि नहीं, बल्कि काव्य है। यह कथन है –
  - (a) लॉजाइनस का
  - (b) अरस्तू का
  - (c) मैथ्यू आर्नल्ड का
  - (d) टी. एस. एलियट का
  
4. 'दि कॉकटेल पार्टी' के रचयिता हैं –
  - (a) टी. एस. एलियट
  - (b) लॉजाइनस
  - (c) विलियम वर्ड्सवर्थ
  - (d) इनमें से कोई नहीं
  
5. एलियट के मतानुसार मनोरंजन का उत्कृष्ट रूप है –
  - (a) काव्य
  - (b) संगीत
  - (c) दोनों
  - (d) इनमें से कोई नहीं

